मन उड़ गयो पंख लगा के, बन मोर पहुँच्यो बरसाने

प्रेम भक्ति और रंगरस की सरिता बहती जाय,
ब्रजमंडल में दिव्य धाम यह बरसाना कहलाये ।
कहे 'मधुप' जब जब भी मोहे, याद बरसाना आय,
मन मेरा मन मोर रंगीला, उड़ता उड़ता जाय ॥

मन उड़ गयो पंख लगा के, बन मोर पहुँच्यो बरसाने ।

संकेत वन और प्रेम सरोवर,
राधा बाग और पीली पोखर ।
फिर गयो महल रंगीली में,
कलगी और पंख वो रंगवाने ॥
मन उड़ गया पंख लगा के...

सज धज कर या ने भरी उडारी,
जा पहुँचयो महल अटारी ।
श्री जी मंदिर लाड़ली लाल के,
लगा झूम झूम दर्शन पाने ॥
मन उड़ गया पंख लगा के...

सांकरी खोर और गहवर वन,
मान गड़ी में डोले तन मन ।

आकरके मोरकुटी में,
लगा पंख रंगीले लहराने ॥
मन उड़ गया पंख लगा के...

मोरकुटी में संत शरण में,
बड़ो ही आनंद गुरु चरनन में ।
सुन गीत 'मधुप' के रसीले,
लगो मोर नाचने और गाने ॥
मन उड़ गया पंख लगा के...

Source:
https://www.bharattemples.com/man-ud-geyo-pankh-lga-ke-bn-mor-paunchiyo-barsaane/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw